दिनांक : 23 जनवरी 2014

न बेचने के लिए कुछ और न कुछ दिखाने के लिए

- अरुण जेटली

राज्य सभा में विपक्ष के नेता

प्रतिकूल राजनीतिक माहौल में सामने नहीं आने के बाद आखिरकार यूपीए के दो प्रमुख मंत्रियों ने मुंह खोला है। पी. चिदम्बरम विश्व आर्थिक मंच की बैठक में भाग लेने के लिए दावोस में हैं। उम्मीद की जा रही थी कि जब वे विभिन्न देशों के राजनीतिक और व्यापारिक नेताओं से मिलेंगे वे भारतीय अर्थव्यवस्था का गुणगान करेंगे। लेकिन इसके बजाय उन्होंने भाजपा और मोदी पर बात की। उन्होंने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को चलाने की भाजपा की क्षमता पर सवाल उठाए। लोगों को याद होगा कि 1998 से 2004 के बीच भारत की अर्थव्यवस्था का प्रबंध किस प्रकार किया गया था। उस अवधि की आलोचना करने के लिए शायद कुछ खास नहीं होगा। संयोगवश, जिस दिन वह भाजपा और नरेन्द्र मोदी के बारे में दावोस में बात कर रहे थे, उसी दिन मूडी ने भारत के बारे में अपनी रिपोर्ट जारी कर दी जिसकी जानकारी मीडिया में दी गई। इसमें संकेत दिया गया कि कायापलट के लिए उद्योग आज नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राजनैतिक बदलाव का इंतजार कर रहा है।

कपित सिब्बल ने अपने परिचित अंदाज में विपक्ष के बारे में चर्चा की। उनके ब्लॉग में नरेन्द्र मोदी को 'सेल्समैन' और अरविंद केजरीवाल को 'शो मैन' बताया गया। उन्होंने और वित्त मंत्री ने न केवल इस तथ्य की अनदेखी की कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, गुजरात और गोवा आज उन राज्यों में से एक हैं जहां सुशासन है और जहां जीडीपी राष्ट्रीय औसत से बहुत अधिक है जबकि पहले इनमें से तीन राज्य बीमारु राज्य थे बल्कि मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे राज्यों में कृषि विकास दर दहाई के अंकों में है जिसके कारण वहां समृद्धि आई है।

लेकिन कपिल सिब्बल की 'सेल्समैन' की बात कुछ अलग है। उन्होंने सवाल किया है ''बीएस येदुयुरप्पा के भाजपा में प्रवेश पर मोदी चुप क्यों हैं''। इसके बाद उन्होंने भाजपा शासित अन्य राज्यों में मंत्रियों के खिलाफ लगाए गए उन आरोपों का जिक्र किया है जिनको साबित नहीं किया जा सका है।

जिस समय बीएस येदीयुरप्पा के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया गया, पार्टी ने उनसे इस्तीफा देने को कहा। इसके कारण कर्नाटक इकाई में दरार पड़ गई और राज्य सरकार को इसकी कीमत अदा करनी पड़ी। आज वह बिना शर्त पार्टी में शामिल हो गए हैं। उनके खिलाफ लगाए गए कुछ आरोपों को उच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया है और बाकी में मुकदमा नहीं चल रहा है। पार्टी ने उन्हें कोई पद देने की पेशकश नहीं की है लेकिन उन्होंने भाजपा के लिए बिना शर्त काम करने की पेशकश की है।

कपिल सिब्बल की अपनी पार्टी क्या कर रही है उससे इसकी तुलना कीजिए। उसने दोषी लालू प्रसाद यादव के साथ गठबंधन कायम करना पसंद किया। राज्यपाल द्वारा मुकदमा चलाने की अनुमति नहीं देकर उसने अपने पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण का बचाव करने का फैसला किया। उनकी सरकार अब तक के सबसे बड़े भ्रष्टाचार में शामिल रही चाहे वह 2जी स्पेक्ट्रम आबंटित करने का मामला हो या कोयला ब्लॉक आबंटन का। भारत में बिजली क्षेत्र प्रभावित हो रहा है क्योंकि बड़ी संख्या में कोयला ब्लॉक ठप्प पड़े हैं। उनकी पार्टी का नेतृत्व हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री के खिलाफ कार्रवाई करने में असमर्थ है जहां चैकों के जरिये गैरकानूनी तरीके से संतुष्ट किया गया है। मुझे यकीन है कि सिब्बल को अपने नेताओं के बेटों और दामादों के व्यावसायिक लेन–देन की जानकारी होगी। उनकी पार्टी ने देश को ऐसी सरकार दी है जो अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार है। निवेशकों की भारतीय अर्थव्यवस्था में दिलचस्पी नहीं रह गई है। हाल में हुए विधानसभा चुनावों में मंहगाई और भ्रष्टाचार ने उनकी पार्टी का सफाया कर दिया। पार्टी और सरकार दोनों के नेतृत्व में कोई उत्साह नहीं दिख रहा है। उनके वित्त मंत्री ने कल स्वीकार किया कि उनकी पार्टी चुनाव में उपेक्षित रहेगी। भारत के संसदीय चुनावों के इतिहास में हो सकता है कि कांग्रेस को इस बार सबसे कम सीट मिले।

पार्टी अपने विरोधियों को सेल्समैन और शो मैन कह कर बदनाम कर सकती है। खेद की बात तो ये है कि कांग्रेस पार्टी के पास न तो कुछ बेचने के लिए है और न ही मतदाताओं को दिखाने के लिए कुछ है।